PAPERS LAID ON THE TABLE- *Contd.*

Notification of the Ministry of Finance (Department of Revenue) under the Customs Act, 1962,

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF REVENUE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI AJIT PANJA) : Sir, I beg to lay on the Table, under section 159 of the Customs Act, 1962, a copy (in English and Hindi) of the Ministry of Finance (Department of Revenue) Notification No. . 238/88-Customs, dated the 18th August, . 1988. reducing the export duty of coffee from the level of Rs. 170/- per quintal to Rs. 100/- per quintal, in supersession of the Notification No. 220/87-Customs, dated the 19th May, 1987, together with an Explanatory Memorandum thereon. [Plactd in Library. *See* No. LT 6416/88]

I. STATUTORY RESOLUTI NSEEK-ING DISAPPROVAL'OF THE RELIIOUS INSTITUTIONS'(PREVENTTON OF MISUSE) ORDINANCE, 1988 (NO. 3.0F1988) contd.

II. RELUOUS INSTITUTION (PREV-ENTION OF MISUSE) BILL, 1988— *contd.*

श्रीमती वीणा वर्मा (मध्य प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं सरकार द्वारा प्रस्तुत इस बहु प्रतीक्षित विधेयक धार्मिक संस्थान दुरुपयोग निवारण का हार्दिक स्वागत करती हूं। देश में इस समय धर्म के नाम पर कट्टरवाद और उसकी आड़ में राजनीति का लाभ उठाने की प्रवृति जिस तरह जड़ जमाती जा रही है मैं आशा करती हूं कि यह विधेयक उस विष वृक्ष को समूल नाश कर सकेगा । लेकिन इस विधेयक के संदर्भ में कुछ मूलभूत मुद्दों पर विचार करना गौरतलब होगा ।

दरअसल धर्म एक भावुक मसला है जो मनुष्य की अन्तरात्मा से जुड़ा हुआ है । जहां तक हमारे भारतीय समाज का प्रश्न है धर्म और समाज एक दूसरे से पृथक नहीं हैं । हर धर्म अपने समाज के लिये एक आदर्श की स्थापना करता है । लोगों में प्रेम और भाईचारे की संवेदना जागृत करता है । आज से 5000 वर्ष पूर्व भारत को महान से महानतर बनाने की कल्पना करने वाले वेदव्यास ने घोषणा की थी "अरे लोगो । मैं अपनी दोनों भुजायें उठा कर उच्च स्वर में उद्घोष कर रहा हूं । लेकिन मेरी कोई नहीं सुनता। मानव जीवन के जो चार पुरूषार्थ हैं – धर्म, अर्थ काम और मोक्ष–इनमें सांसारिक जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक अर्थ और काम की सिद्धि भी धर्म के माध्यम से ही हो सकती है । लेकिन उन्होंने धर्म की व्याख्या स्पष्ट रूप से कर दी थी" उन्होंने कहा कि धर्म का सार है "आत्मः प्रति-कलानि परेषा न समाचरेत्" अर्थात् अपनी अन्तरात्मा के विरूद्ध अन्य व्यक्तियों के साथ आचरण नहीं करना चाहिये । "अर्थात जिससे अधिक से अधिक प्राणियों का अधिक से अधिक हित हो वही सत्य है वही धर्म है । इसी बात को महात्मा बुद्ध ने बहुत पहले अपने भिक्षुओं को उपदेश देते समय कही थी कि भिक्षुओं जब तुम उपदेश करने जाओ तो हमेशा अधिकतम लोगों के सुख और हित का ध्यान रखो जिस से लोक कल्याण हो सके । इसी से "वसुधैव कुटुम्बकम" वाली भारतीय संस्कृति की विशेषता चरितार्थ होती है ।

धर्म समग्र जीवन का अंग है । इससे जीवन का कोई क्षेत्र अछूता नहीं रह सकता । राजनीति भी क्योंकि जीवन का अंग है इसलिये वह भी धर्म से अलग नहीं रह सकती । लेकिन राजनीति समय सापेक्ष तथा व्यावहारिक होती है । यह बुद्धिजन्य है । जबकि धर्म अनुभूतिजन्य, आचार प्रधान एवं नैतिकताप्रधान है । बहुत संभव है । धर्म की स्थापित मान्यतायें किसी खास